हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिला कलाकारों का योगदान (तबला वादन के विशेष संदर्भ में)

प्रियंका अरोड़ा[1] और प्रो. (डॉ.) गुरप्रीत कौर[2]

महिला संगीतज्ञों का हिन्दुस्तानी संगीत में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। महिलाओं ने संगीत जगत मे तो, क्या अन्य विषयों में ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए जो सदैव अविस्मणीय रहेगें। आदि काल से ही कोमलता की अवस्था में बनी नारी जाति सुकुमारता व कोमलता के प्रतीक संगीत को अपनाती रही, उनमें संगीत में अपनी भावानाओं की कोमलता, कंठ की मधुरता और हृदय की सकुमारता में साम्य देखा और इस नारी ने अपने कंठ में संगीत को बिठा लिया। अपने अन्य गुणों के साथ–साथ ललित कलाओं में प्रेम व संगीत में सर्व नारी जाति में स्वभावित रूप में आई। आदिकालीन ग्रंथों, वेदों में भी नारी के साथ संगीत कला का वर्णन किया गया है, उस काल में जहाँ भी संगीत का वर्णन है, वहाँ नारी को भी गायन, वादन और नृत्य में संलग्न बताया गया है। सभी देवताओं में देवी सरस्वती को संगीत और विद्या की अधिष्ठात्री मान गया है।

प्राचीन काल से ही नारियां संगीत, साहित्य, ललित कला, प्रेम एवं भक्ति से आबाद रही हैं। संसार का इतिहास नारीयों के त्याग, बलिदान, आर्दश ज्ञान एवं स्नेह का गौरव गाथाओं से परिपूर्ण है। जहाँ वैदिक काल एवं पौराणिक युग में गधर्व किन्नर और अप्सराओं के साथ संगीत का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा, वहाँ गंधर्व जाति की स्त्रियाँ पुरूष और शिशु कन्याएँ संगीत में दक्ष होती थीं। गायन, वादन, नृत्य के अयोजनों में महिलाएँ पुरूष की भांति ज्यादा भाग लेती थीं। ऋवेद में गाती हुई स्त्रियों का वर्णन होता है।

"अजन्ता की गुफा में गीत, वाद्य और नृत्य करती हुई स्त्रियों का चित्र भी अंकित हैं जिसमें, तीन महिलाएँ नृत्य कर रही हैं। दो के हाथों में शहनाई अथवा नागस्वरम् की आकृति वाले लम्बे सुषिर वाद्य हैं तथा अन्य स्त्रियाँ तालियाँ बजाकर संगीत के साथ तप्त प्रस्तुत कर रही है।" नारी और पुरूष दोनों ही भरतकाल में नाट्यशास्त्र के कालखण्ड में नाटकों में भाग लेते थे। नाटक में अभिनय करने वाली स्त्री के लिए "नाटकीया" संज्ञा का प्रयोग किया गया। "नायिका का पद ऐसी महिला को दिया जाता था, जो अन्य महिला गुणों के साथ रक्त कंठी तथा लयतलज्ञा हो।" मौर्य काल में राजा अशोक के काल में अनेक नारियाँ नृत्य, गायन और वादन में परांगत थी। अशोक राजमहल में अनेकें परिचारिकायें थीं, जिनका संगीत का ज्ञान उच्चकोटि का था। भारतीय संगीत के इतिहास में गुप्त काल को स्वर्णयुग कहा गया है। इस काल में साहित्य, संगीत एवं अन्य ललित कलाओं की चतुर्मुखी उन्नति हुई। अमरावती के एक चित्र में "अपरोधसंगीत" का दृश्य अंकित है, जिसके अन्तर्गत तीन महिलायें सरोदाकार वीणा बजा रही हैं। चार स्त्रियाँ ढोलक बजा रही हैं एवं अन्य तीन स्त्रियाँ वंशी बजा रही हैं। गुप्तकाल में अजन्ता के एक चित्र में तीन स्त्रियों को कांस्य के साथ गाना गाती हुई एवं वाद्य के रूप में ढोलक बजाते हुए अंकित किया गया है।

एक संगीत योजन में ताल वादक महिला का अंकन हुआ है जो कि पार्श्व में बैठकर ताल देने का कार्य कर रही है। तबले का अंकन भारतीय कला में आति प्राचीन है। महाराष्ट्र में स्थित गुफाओं में प्रस्तुत चित्रों से यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि उस काल की स्त्रियाँ भी तबला जैसे अवनद्ध वाद्य का वादन किया करती थीं। भारतीय संगीत में अनवद्ध वाद्यों का वादन विशेष रूप से अधिक शक्ति व श्रमसाध्य है। यही कारण है कि अवनद्ध वाद्यों के वादन में बहुत समय से पुरूष वादकों का ही एकाधिकार रहा है। प्राचीन चित्रों, प्रस्तर शिल्पों में पुरूषों के अतिरिक्त स्त्री अवनद्ध वाद्य–वादिकाओं के भी चित्र, मूर्तियों मिलती हैं। अवनद्ध वाद्यों में ढोलक का प्रयोग महिला लोकगीतो एवं लोक नृत्य में दृष्टिगत होता है।

संगीत के क्षेत्र में महिलाओं द्वारा कदम रखना काफी कठिन कार्य था। बहुत कम महिलाएँ कलाकारों के रूप में समाने आई। इसके कई कारण थे संगीत के प्रति हमारा संकुचित दृष्टिकोण, उचित परिस्थितियों का अभाव, परिवारिक वातावरण एवं महिलाओं के प्रति सहिष्णुता का आभाव।

1 शोध–छात्रा, संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।
2 अधिष्ठाता, संगीत एवं मंच कला संकाय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

आधुनिक काल में ब्रिटिश व्यवस्था के उपरान्त महिलाओं में पुनः जागृति आई और सामाजिक व्यवस्था में भोग विलास आदि तत्वों का निवारण किए जाने पर महिलाओं को पुनः कलाक्षेत्र में भाग लेने का अवसर प्राप्त होने लगा। धीरे–धीरे महिलाओं की शक्ति उजागर हाने लगी और उन्हें पुरूषों के समक्ष अधिकार प्राप्त होने लगे। लक्ष्मीबाई से लेकर सरोजिनी नायडू, अमृतकौर, बैगम ऐजाज रसूल, विजयलक्ष्मी, मदर टैरेसा और इन्दिरा गांधी तक ने सामाजिक, राजनैतिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

संगीत के क्षेत्र में पुनः नारियाँ अपनी कला निपुणता के कारण फिर से समाज में सम्मान पाने लगीं। महिलाओं ने उच्च कोटि के उस्तादों से संगीत की शिक्षा लेनी प्रारम्भ कर दी। इनमें जयपुर घराने की केसरबाई केरकर, मोधूबाई कुर्डीकर, दुर्गाबाई कुलकर्णी। किराना घराने की हीराबाई बड़ौदकर, गंगूबाई हंगल, रसूलन बाई, मैहर घराने की श्रीमती अन्मपूर्ण देवी, शरणरानी बाक्तीवाल। कुछ महिलाओं ने तो संगीत जगत में ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए है जो सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

अध्ययन का महत्त्व

महिला तबला वादकों पर उतना शोध कार्य नहीं हुआ है, जितना पुरूष तबला प्रधान वादकों पर हुआ है, इसका मुख्य कारण भले ही भारत का पुरूष प्रधान समाज रहा हो, इसलिए इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से महिला तबला वादकों के जीवन और कला को प्रकाश में लाने में सहायता मिलेगी। जिसके फलस्वरूप भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्यों को करने की प्रेरणा भी शोधकर्त्ता को मिलती रहेगी।

समस्या कथन

समस्या का कथन निम्नलिखित है–

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिला कलाकारों का योगदान (तबला वादन के विशेष संदर्भ में)

शोध के उद्देश्य

1) महिला तबला वादकों के योगदान का अध्ययन करना।

2) महिला तबला वादिकाओं के जीवन चरित्र का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि

दत्त संग्रह के लिए जीवन वृतांत और सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

दत्त संग्रह विधि

शोधकर्त्ती ने न्यादर्श में शामिल महिला तबला वादिकाओं से सम्बन्धित पुस्तकें, लेख, रिकार्डिंग एकत्रित की। इनका गहणता से अध्ययन करने के उपरान्त एक–एक तबला वादिका के तबले के प्रचार प्रसार तथा उन्नति में योगदान का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया।

दत्त विश्लेषण

दत्त सामग्री का विश्लेषण गुणात्मक विधि द्वारा किया गया।

शोध कार्य की सीमाएँ

शोध कार्य की सीमाएँ निम्नलिखित है–

1) महिला तबला वादकों के जीवन वृत एवं संगीतात्मकता का परिशीलन 5 कलाकारों तक सीमित रखा गया। जिनके नाम निम्नलिखित हैं –

क) डॉ॰ योगमाया शुक्ल ख) डॉ॰ आबान मिस्त्री ग) अनुराधा पाल घ) सुनैन्या घोल ड़) रिम्पा शिवा

2) उक्त अध्ययन पर समीक्षात्मक दृष्टिकोण को दृष्टिगत रखते हुए 20 कलाकारों से साक्षाकृत किया गया।

3) उक्त शोध कार्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विशेष संदर्भ तक सीमित है।

(क) डॉ॰ योगमाया शुक्ल

हिन्दुस्तानी संगीत में प्रतिष्ठित एवं प्रतिभाशाली कलाकारों में से डॉ॰ योगमाया शुक्ल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डॉ॰ योगमाया शुक्ल ने अपनी कला साधना के लिए काफी कठिन मेहनत, अटूट लग्न द्वारा भारतीय संगीत के क्षेत्र में तबले को काफी विस्तृत बनाने में अपना विशेष योगदान दिया। डॉ॰ योगमाया शुक्ल जी एक उत्तम तबला वादिका है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

डॉ॰ योगमाया शुक्ल का जन्म 14 नवम्बर 1933 ई॰ को असम के सिलचर नामक शहर में हुआ। आप स्व॰ नरसिंह भट्टटाचार्य जी की द्वितीय कन्या है। बचपन से ही तबला वादन के प्रति उनकी अभिरूचि थी। पिता श्री नरसिंह भट्टचार्य को संगीत से बहुत लगाव था और आपके पिता द्वारा ही आपको संगीत की प्रोरणा मिली।

कला जीवन का प्रारम्भ

संगीत की प्रारम्भिक प्रेरणा आपको अपने पिता श्री नरसिंह भट्टाचार्य जी से मिली। पिता द्वारा प्रेरित से बालिका योगमाया शुक्ल की गायन व तबला वादन की शिक्षा स्व॰ उ॰ अलाऊदीन खाँ ने नाती उस्ताद फुलझड़ी–खाँ से प्रारम्भ हुई। चार वर्ष की गायन व तबला वादन की शिक्षा के पश्चात् श्रीमति योगमाया शुक्ल को असम सरकार द्वारा छात्रवृति देकर इन विषयों की उच्च शिक्षा के लिए भातखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनऊ भेजा वहाँ श्रीमति शुक्ल को भारत के विख्यात मृदंगाचार्य स्व॰ पंडित सखाराम जी से तबला सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

संगीतिक शिक्षा

महज चार वर्ष की आयु में अपने गायन व तबला वादन की शिक्षा प्राप्त करनी प्रारम्भ कर ली थी। सर्वप्रथम आपने स्व॰ पण्डित सखाराम जी से तबले की शिक्षा प्रारम्भ की। इसी बीच वार्षिक परीक्षाओं के सम्बन्ध में उ॰ अलाऊदीन खाँ जी का लखनऊ आगमन हुआ। उस्ताद खाँ साहब का पैतृक गाँव बावाउड़ा बंगल देश पास–पास स्थित है। इस नाते और खाँ साहब के नाती की शिष्या हाने के कारण खाँ साहब योगमाया शुक्ल जी को बहुत स्नेह करते थे। उन्होंने शुक्ल जी की तबला वादन में रूचि देखकर उन्हें फरूखाबाद घराने के प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद मुन्ने खाँ साहिब की शार्गिदी करवा दी। श्रीमति योगमाया शुक्ल ने लम्बे समय तक उस्ताद मुन्ने खाँ साहब से तालीम ली और अपनी लग्न व साधन से तबला वादन के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाया।

आकादमिक योग्यताएँ

तबले के साथ–साथ श्रीमति योगमाया शुक्ल जी ने गायन में संगीत विशारद, तबले में बी. म्यूज, "संगीत अलंकार" एम॰ म्यूज और दिल्ली विश्वद्यिालय से "तबले का उद्‌गम, विकास और वादन शैलियाँ" नामक शोध प्रबन्ध पर पीएच॰डी॰ की उपाधि प्राप्त की।

शास्त्रकार के रूप में

डॉ॰ योगमाया शुक्ल जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से "तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियाँ नामक शोध प्रबन्ध पर पीएच॰डी॰ की उपाधि प्राप्त की। यह शोध तबले की उत्पति, विकास और वादन शैलियों के ऐतिहासिक पक्ष से सम्बन्धित है। इस शोध पर मुख्यतः ऐतिहासिक दृष्टि से ही अनुसंधान व विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तबलावादकों के घरानों और उनके बाज की विशेषताओं का वर्णन भी विशेषकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ही किया गया है। तबला वादन के क्षेत्र में उन्हें बम्बई की सुरसिंगार ससंद द्वारा ताल मणि की उपाधि से विभूषित किया गया।

कला प्रचारक के रूप में

अपने परिवार और पति डॉ॰ शत्रुघ्न शुक्ल जी के सहयोग से दिल्ली, बम्बई, कलकता, वाराणसी, मैसूर, जयपुर, गोहाटी, नान्देड़, कानपुर, लखनऊ, मुरादाबाद, देहरादून, मेरठ, आगरा, सिलचर, इत्यादि प्रमुख नगरों में तबला सोलों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। अपने तबला वादन कला प्रदर्शन के साथ डॉ॰ योगमाया शुक्ल जी ने अनेक संगीत परिचर्चाओं, सेमिनारों में भाग लेकर तबला विषय सम्बन्धि पत्रवाचन व व्याख्यान भी प्रस्तुत किए है।

(ख) डॉ॰ आबान मिस्त्री

हिन्दुस्तानी संगीत के प्रतिष्ठित कलाकारों में से तबला वादिका डॉ॰ आबान मिस्त्री का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। परम्परागत धारणाओं को ध्वस्त करते हुए बम्बई की डॉ॰ श्रीमति आबान मिस्त्री ने तीन दशक पूर्व इस क्षेत्र में नये प्रतिमान स्थापित किए है। डॉ॰ आबान संगीत की दुनिया में कठिन लयकारिता की सिद्धहस्त कलाकार मानी जाती है। देश के गिने चुने तिहाई बजाने वालों में आबान का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

श्रीमति आबान मिस्त्री जी का जन्म 1940 में एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ जिससे संगीत उन्हें विरासत के रूप में प्राप्त हुआ। माता श्रीमति खरशेद मिस्त्री दिलरूबा तथा पिता श्री एस शाह वायलिन बजाने में दक्ष ही थे।

कला का प्रारम्भ

गायन की प्रारम्भिक शिक्षा घर में ही अपनी मौसी मेहरू वेकिंग बाक्सवाला से शुरू हो गई। चार वर्ष की अल्पायु में गायन उत्तेजक मण्डल के लक्ष्मणराव बोडस से गायन की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के साथ साथ आपका नृत्य का प्रशिक्षण भी चलता रहा। किन्तु पेट के आप्रेशन के कारण डाक्टरों ने उन्हें नृत्य छोड़ने की सलाह दी जिसका उन्हें बहुत सदमा पहुँचा। कथक कलाकार का सपना टूटने पर गुरु पंडित केकी जिजिना ने बालिका आबान का हौसला बढ़ाते हुए कहा, "नृत्य में तुम जिस मुकाम पर पहुँच सकती थी, उसी स्थान पर मैं तुम्हें तबलावादन में पहुँचाऊगा।" संयोगवश एक बार सुविख्यात तबला वादक उ॰ अमीर हुसैन खाँ जी ने एक कार्यक्रम में आबान जी का तबला वादन सुना और बहुत प्रभावित हुए। आबान जी की सुप्रिसद्ध तबला नवाज़ उस्ताद अमीर हुसैन खाँ जैसे विद्वान से वर्षों तक तालीम प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर उन्होंने कुछ समय बाद आपने उनसे चारों घराने की शिक्षा प्राप्त की (दिल्ली, अजराड़ा, फरूखाबाद, बनारस)। आपने शोलापुर के श्री भीमराव कनकधर के मार्ग दर्शन में अभ्यास कर अपनी कला को निखारा।

अकादमिक योगताएँ

श्रीमति आबान मिस्त्री जी ने अखिल भारतीय गांधर्व मण्डल बम्बई से सितार में संगीत विशारद तथा गायन में संगीत विशारद एवं संगीतालंकर की उपाधियाँ प्राप्त की। इसके साथ साथ अपने हिन्दी एवं संस्कृत में एम.ए. करने के पश्चात् हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा साहित्य रत्न भी प्राप्त किया। इसके पश्चात् आपनी संगीत में पीएच.डी. श्री वी.आर. आठवले जी के निर्देशन में की। पीएच.डी. में आपके शोध का विषय "पखावज और तबला के घराने; उद्‌भव, विकास एवं विविध परम्परायें" था।

शास्त्रकार के रूप में

श्री वी.आर आठवले जी के निर्देशन में पखावज "तबला के घराने; उद्‌भव, विकास एवं विविध परम्परायें नामक शोध प्रबन्ध पर आपको डाक्टरेट की डिग्री मिली।

संस्थापक के रूप में

बम्बई की संगीत संस्था 'स्वर साधना समिति' की आप संस्थापक व संरक्षक भी रही। संगीत के व्यापक प्रचार प्रसार के लिए डॉ॰ आबान मिस्त्री जी अपने द्वारा सन् 1961 में स्थापित 'स्वर साधना समिति' के माध्यम से, प्रति वर्ष अखिल भारतीय स्वर के संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। इसके साथ–साथ वे गायक, वादक, नर्तक, शास्त्रज्ञ, संगीतकारों, समीक्षकों, आदि को सम्मानित किया जाता है और निर्धन छात्र छात्राओं के लिए निःशुक्ल शिक्षा की व्यवस्था भी किया जाती है। इस समिति के मंच से देश के कोने कोने के कलाकार प्रत्येक माह अपनी कला का प्रदर्शन करते है। इस संस्था का उद्देश्य शास्त्रीय संगीत का अधिकारिक प्रचार एवं प्रसार कर भारतीय कला को देश–विदेश में पहुँचाना है।

कला प्रचारक के रूप में

वे मात्र 16 वर्ष की आयु में देश की प्रख्यात् तबला वादिक बन चुकी थीं। तब से अब तक वे देश भर में सैकड़ों एकल वादन के कार्यक्रम प्रस्तुत पर चुकी हैं। डॉ॰ आबान जी ने सन् 1983–84 में इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंण्ड, रोम, स्विरजरलैण्ड में अपने

तबले की ताल से हजारों विदेशी संगीतप्रेमियों को चमत्कृत कर दिया था। सन् 1986 में दुबई, मस्कट, बहरीन आदि देशों में उनके कार्यक्रम सफल रहे। सन् 1988 में वे भारत महोत्सव के सिलसिले में कई स्थानों पर कार्यक्रम देने भी गयी।

कलाकार के रूप में

बहुमुखी प्रतिभा की धनी तबले पर जब थाप देतीं तो ऐसा प्रतीत नहीं होता कि कोई महिला तबला बजा रही है। बोलों का स्पष्ट निकास, बाएं की गणितकारी तथा बेमिसाल किसी पुरूष तबला वादक से कम नहीं है। अप्रचलित तालों में दो–दो घण्टे तक स्वतन्त्र तबला वादन प्रस्तुत करना आपकी अपनी विशेषता है। अप्रचलित तालों में इतनी देर तक बजाना कोई मामूली बात नहीं। तबले के साथ–साथ आपने गायन व सितार भी सीखा। श्रीमति आबान मिस्त्री जी देश की अग्रणी महिला तबला वादिका हैं और सम्भवतः आप पहली महिला कलाकार है जिनका एक ग्रामोफोन रिकार्ड भी तैयार हुआ। डॉ॰ आबान मिस्त्री जी ने तबला मात्र प्रदर्शित ही नहीं किया, वरन् इसकी कठिन लयकारियों को स्थायी बनाए रखने का प्रयास किया। सन् 1974 में उनका ग्रामोफोन रिकार्ड "ताल त्रिताल" प्रकार्शित हुआ।

(ग) अनुराधा पाल

हिन्दुस्तानी संगीत के प्रतिष्ठित कलाकारों में से तबला वादिका अनुराधा पाल जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अनुराधापाल जी भारत के प्रसिद्ध तबला वादन अल्लारखा खाँ और जाकिर हुसैन जी की शिष्या हैं।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

विश्व विख्यात ताल वादिका अनुराधा पाल जी का जन्म मुम्बई में हुआ। इनके पिता जी का नाम दवीन्द्र तथा माता का नाम इला पाल है। इनके तबला वादन को आगे बढ़ाने में इनके माता पिता तथा इनके पति श्याम शर्मा जी का विशेष से सहयोग रहा।

कला जीवन का प्रारम्भ

इन्होंने तबला वादन की शिक्षा विश्व प्रख्यात उ॰ अल्लारखा खाँ तथा जाकिर हुसैन जी से प्राप्त की। आज के समय में अनुराधा पाल जी एक विश्व विख्यात महिला तबला वादिका के रूप में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

अनुराधा पाल की उपलब्धियाँ का मूल्यांकन

अगस्त 2008 में विश्व प्रसिद्ध 'Woodstock Festival' यूरोप में अनुराधा पाल में अपनी सोलो प्रस्तुति दी अपने फ्यूज़न बैंड 'Recharge' को प्रस्तुत किया। इस फैसटिवल में लगभग चार लाख श्रोताओं ने भाग लिया। अनुराधा पाल द्वारा निर्मित 'Recharge fusion band' अकेला बैंड था, जिसने इस Woodstock festival में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1999 में World Famous Festival 'WOMAD' U.K. में आयोजित किया गया, जिसमें अनुराधा पाल अकेली भारतीय महिला संगीतज्ञ थी, जिन्होंने छोटी उम्र में हो इस फैसटिवल में तकरीबन 1.5 लाख प्रत्यदर्शियों के समक्ष अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अनुराधा की वादन कला से प्रभावित होकर इग्लैण्ड की महारानी ऐलिजाबेथ, भारत के प्रधान मंत्री द्वारा इनको सम्मानित किया गया। महाराष्ट्र राज्य द्वारा (2006) में इन्हें 'सांस्कृतिक पुरस्कार' द्वारा सम्मानित किया गया। अनुराधा पाल जी को "Zee Astitva Award" से सम्मानिक किया गया।

महिलाओं की शिक्षा एवं उपलब्धियों पर आधारित फिल्म, जो कि UNICEF द्वारा प्रसारित की गई, इसमें इन्होंने Brand Ambassador के रूप में पदस्थ रहीं। इन्होंने 'Asian Performers Summit' जापान में तथा Common Wealth games festival U.K. में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इनकी उपलब्धियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह बहुमुखी प्रतिभा की तबला वादिका थी।

शास्त्रकार के रूप में

Neuro sciences university of San Diego esas "Relationship between the brain, music and language" के शोध कार्य में अपना सहयोग दिया तथा "Study of Tabla, Aesthetics its complexities" Harvard University of U.S.A. में पूर्ण अपना सहयोग दिया।

संस्थापक के रूप में

अनुराधा पाल जी ने Street Shakti नामक fussion band का निर्माण किया जिसमें एशिया की सभी महिलाओं (गायिकाएँ वादिकाएँ) और ताल वादिकाओं को सम्मलित किया। इनके द्वारा Recharge नामक World Music fussion group का भी निर्माण किया गया, जिसमें Indian, African, Latin और Jazz संगीत पर आधारित है।

M.F. Hussain की फिल्म गजगामिनी में अनुराधा पाल जी ने तबला वादन किया, जिसें बंददमे फिल्म फैस्तिवल में खूब सराहा गया। इन्होंने लगातार फिल्मों में, म्यूजिक एलब्मों में थिएटर में और डाक्युमेंटरी फिल्मों में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

Major International Performance

In U.K. WOMAD (World of Music and Dance Festival)

World Premier of the commonwealth games (Manchester)

Bath International Music festival and the city of London festival at the prestigious Barbican.

Rhythm Sticks (Queen Elizabeth Hall) and BBC Music live festival (Scotland)

Greenwich and Docklands festival, candiff Jazz festival, Asian Music festival amongst several other venues in U.K. on tour with prominent artists.

In USA-Masters of Indian Music festival, Young Music wizards of India, Ali Akbar Khan Festival, Basant Bahar festival (SFO), Asia society (N.Y and SFO), MITHAS, Berkeley school of music, learnquest music festival (Boston).

अनुराधापाल जी द्वारा महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में अनेक वर्कशाप तथा विभिन्न कार्यक्रम

Artist in residence at prestigious New England Conservatory, Boston to teach percussion to percussion major students.

In Japan Tokyo Music festival, phoenix music festival, Japan Music festival.

In Europe– The world famous wood stock festival (Poland), voices of the world festival (Newmark), Sangam India Music Festival, (Germany), Museum Rietberg (Zurich) among others.

In Australia-Bellingen global festival, carnivalli festival, Melba conservatory of music, Qureensland performing arts complex.

Rest of the world – In the Bangkok International Music festival, Hong Kong, Victoria Arts Hall in Singapore, New Zealand and for the CHOGM summit in Africa amongst numerous other concerts all over the world.

International Media Appreciation and Documentaries

विश्वस्तरीय मीडिया, प्रेस, रेडियों तथा टी.वी चैनलों द्वारा अनुराधा जी को खूब प्रंशसित तथा प्रोत्साहित किया गया।

Featured on polish T.V's major European channel as a great achiever and Indian music.

Featured Anuradha in film titled, "Woman of Substance".

Documentary 'All about her"

The BBC world service recorded her group Street Shakt's memorable concert at the world famous WOMAD festival in reading, UK where she had the packed auidence of 1.5 lakh begging for more.

"Anuradha was featured in documentary titled "Aaj ki Nari"

Featured extensively on NPR, Asia TV (USA) Radio 3, Sun rise Radio (U.K), ITV, Australian T.V. and Radio Channels like ABC, SBC and 3LO, Japanese TV-Radio Channel and All Indian TV and Radio Channel like Doordarshan, star TV, Zee, Times TV, NDTV, Aaj Tak, CPC, Alpha ETC, Surya T.V, ETV etc.

Music Albums and DVD'S released

इनकी वादन की अनेको DVD's और CD's प्रकाशित हुई।

शिखर सम्मान

अनुराधा पाल जी को महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'सुसंस्कृत पुरस्कार से Sept. 2006 द्वारा नवाज़ा गया।

पं॰ जसराज अवार्ड 'Excellence in Music-Best Musicians of the Year' 1999 में दिया गया।

भातखण्डे ललित शिक्षा समिति द्वारा 'ताल रतन' द्वारा रायपुर (महाराष्ट्र सरकार द्वारा 1997) में सम्मानित किया गया।

रॉटरी कलब द्वारा बम्बई में 1995.96 'vocational excellence Award' द्वारा नवाज़ा गया।

उज्जैन, महाराष्ट्र द्वारा 1993 में महाकाल सम्मान द्वारा सम्मानित क्रिया गया।

1990 में बम्बई स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन, सुर श्रृंगार सम्साद द्वारा 'ताल मगि' अवार्ड द्वारा सम्मानित किया गया।

'All India Music Competition' में गोलर्ड मैडल हासिल किया।

2007 में "Zee" Astitva Award for Excellence in Music द्वारा सम्मानित किया गया।

2009 esa Star Taal Award द्वारा सम्मानित किया गया।

"National Merit Scholarship in 1988 for outstanding academic and music achievements all through college where Anuradha majored in English Literature"

(घ) सुनैन्या घोष

सुनैन्या घोष जी बचपन से ही संगीत की शरण में आ गई थी। उन्होनें लय की गहरी समझ को कम आयु में ही जान लिया था। उन्होनें 6 साल की उम्र से ही तबले में कौतुक के रूप में मान्यता प्राप्त कर ली थी, जबकि यह उपकरण (तबला) आमतौर पर एक पुरूष गढ़ का प्रतिनिधित्व करता है। यही सब विचार उनकी विशिष्टता का स्त्रोत रहे है, तब से आजतक तबले पर उनकी उँगलियाँ थिरकती ही रही है।

संगीतिक शिक्षा

सुनैन्या जी की तबले की तालीम योग्य एवं गुणी समर मिश्र की देख रेख में हुई। जैसे–जैसे उनके करियर की प्रगति हुई, उन्होंने प्रसिद्ध फरूखाबाद घराने के गुण शंकर घोष जी के संरक्षण के तहत अपना शिष्यवत्य प्राप्त किया और पं॰ शंकर घोष, भारतीय तबला उ॰ बिकरम घोष जी के पिता जी भी है। सुनैन्या जी ने संगीत की प्रेरणा अपनी माता जी रीटा घोष जी से ली, जो कि ।सस प्दकपं त्कपव कोलकत्ता में कलाकार थी।

अकादमी शिक्षा

आपने Bachelor of Arts (Honours) रविन्द्रा भारती युर्निवर्सिटी से प्रकाशन डिपाटमैंट में प्रथम स्थान हासिल किया। आपने 2001 में (प्रथम श्रेणी) में Goldmedlist तथा उच्चतम अंको से रविन्द्रा भारती युनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त की और फिर एम.ए तबला में द्वितीय Goldmedal प्राप्त किया।

सुनैन्या घोष जी की उपब्लिधयों का मूल्यांकन

सुनैन्या जी इन्दौर कथक तथा गायकी में भी अपनी पहचान बना चुकी है। परन्तु तबले को लेकर वे अधिक जनून रखती है तथा तबले में उन्होने काफी वाहवाही भी बटोरी है। 1993 से लेकर आजतक अधिकतर तबला वादन के मुकाबलों में हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करती आई है। सुनैन्या जी द्वारा भाग लिए गए मुकाबलो मे कुछ नाम निम्नलिखित है–

West Bengal State Academy of Dance drama music and visual art, the dover lane music conference (talent search contest).

The aurovindo instituted of culture and the all bengal tabla lahara competition.

उपाधियाँ

आपने अपनी विलक्षणता को कड़ी मेहनत द्वारा प्रकट कर विभिन्न उपाधियाँ हासिल की, जिसका वर्णन निम्नलिखित है।

Ram Krishan Mission Institute of Culture द्वारा आपकी प्रतिभा को देखते हुए विभिन्न राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय छात्रवृति प्राप्त हुई। सुनैन्या जी के तबले की प्रतिभा तब अधिक उजागर हुई जब उनका चुनाव ICCR द्वारा भारत के दस युवा संगीतज्ञों मे हुआ जिसमें आपने भारत का नेतृत्व किया। सुनैन्या जी को संगीत भूषण, संगीत विशारद और संगीत भास्कर जैसी उपाधियों से भी नवाज़ा जा चुका है। U.K. Radio द्वारा आपका तबला वादन तंरग F.M में प्रसारित किया गया। New York शहर की पत्रिका Tom-Tom magazine ने पाँचवे संस्करण में उनकी संगीतिक गतिविधयों को प्रकाशित किया। आपने विभिन्न प्रकार की कठिन तिहाईयो को सितार, सरोद, संतूर तथ गायकी में संगति के दौरान प्रदर्शित किया।

(ड़) रिम्पा शिवा

देश के कई प्रसिद्ध कलाकारों को यह सुयोग अवसर प्राप्त हुआ था कि संगीत उन्हें अपने परिवार से मिला जिसके कारण उनको परम्परागत विद्या आसानी से मिल गई एवं स्वतः ही आगे बढ़ने के अवसर मिले। जिसमें रिम्पा शिवा ऐसी ही सौभाग्यशाली कलाकार है। रिम्पा शिवा जो कि एक विश्वविख्यात तबला वादिक है, जिन्हें संगीत जगत में 'Princess of Tabla' भी कहा जाता है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

इनका जन्म 14 जनवरी 1986 ई॰ को एक संगीतिक परिवार में हुआ। 3 साल की उमर में ही इन्होंने तबला वादन में अपनी रूचि दिखाना शुरू कर दी। बचपन से ही इन्होंने तबला वादन की शिक्षा अपने पिता एवं गुरु प्रो॰ स्वप्न शिवा जो स्वर्गीय उ॰ फरमतुल्ला खाँ फरूखाबाद घराने के शिष्य थे से शुरू कर दी।

संगीतिक शिक्षा

रिम्पा शिवा जीवन संगीतिक सफर अपने परिवार से ही प्रारम्भ हुआ था। रिम्पा जी के पिता जी ने इनकी तबला सीखने की इच्छा को पहले गम्भीरता से नहीं लिया था परन्तु जब रिम्पा जी केवल तीन वर्ष की थी तब वे ड्रम की आवाज़ से मंत्रमुग्ध हो जाया करती थी, फिर 9 वर्ष की आयु में इनके पिता जी ने इनकी इस विशेषता को पहचाना कि रिम्पा जी में ताल को समझने का विशेष गुण है जो किसी–किसी बच्चे में 16–17 वर्ष की उम्र में दिखाई देता है। रिम्पा जी अपने जीवन में अपने पिता (गुरु) प्रो॰ स्वपन शिवा जी से विशेष रूप से प्रभावित रही। जब इनके पिता जी अपने शिष्यो को तबला वादन की शिक्षा प्रदान करते थे तब रिम्पा जी उनके द्वारा प्रदान की गई शिक्षा को एकाग्रतापूर्व ग्रहण करती थी। जैसे–जैसे रिम्पा शिवा बड़ी होती गई, वैसे–वैसे तबला वादन में उनकी रूचि बढ़ती ही गई। बचपन से ही रिम्पा जी का रूझान ताल की और था।

अकादमिक शिक्षा

रिम्पा शिवा जी ने रविन्द्र भारती युनिवर्सिटी, कलकत्ता से एम.ए. संगीत में पास किया और अब वह म्यूजिकॉलोजी में पी.एचडी. कर रही हैं।

कलाकार के रूप में

रिम्पा जी अपनी कला को पूजती हैं। उनका उनकी कला (तबला वादन) के प्रति पूर्ण सम्पर्ण हैं। वे अपने कार्यों की सूची में सर्वप्रथम स्थान तबले को ही देती हैं। रिम्पा शिवा जी ने 500 से अधिक संगीत सम्मेलनों में अपनी कला प्रदर्शन किया। ऐसे कुछ ही कम संगीतकार मिलेगे जिन्होंने कम समय में अपनी कला का प्रदर्शन किया, जिनमें से रिम्पा शिवा एक है। जिन लोगों ने रिम्पा शिवा को प्रत्यक्ष तबला वादन करते देखा, वह इनकी वादन कला से प्रभावित हुए बिना न रह सके। इनकी कला का सफर बहुत ही रोचक भरा रहा क्योंकि इन्होंने केवल 14 वर्ष की आयु में ही बड़े–बड़े उस्तादों के साथ जैसे पं॰ हरिप्रसाद चौरसिया और पं॰ अजय चक्रवती के साथ विभिन्न संगीत सम्मेलनों में अपनी कला संगति का प्रदर्शन किया। विश्व प्रसिद्ध बांसुरी वादक पं॰ हरिप्रसाद चौरसिया जी के साथ रिम्पा जी ने Indian national Telivision ij New Millennium year programme में संगति की। छोटी आयु में ही इन्होंने सोली तबला वादन को एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर विश्व में महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया। "The tabla has always been a male dominated instrument but I want to break the preconceptions associated with it."

कला प्रचारक के रूप में

रिम्पा जी ने अपने कला का प्रदर्शन प्रदर्शन केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी किया। आपने अमेरिका, यूरोप, जापान इंग्लैण्ड, नोखे आदि देशों में भी तबला वादन की प्रस्तुति दी।

शिखर सम्मान

1996 में आपने केवल 10 वर्ष की आयु में आपने का प्रदर्शन करने अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए नौरवे का भ्रमण किया। इनकी कला प्रदर्शन के लिए इन्हें 'Arun Land Raj memorial fund' द्वारा आपको अवार्ड दिया गया, जिसमें 5000 रूपये नगद पुरस्कार के रूप में इन्हें दिए गए। World child festival Netherland में आपको 1997 में निमन्त्रण दिया गया। 1998 में इनके जीवन पर एक Documentary film बनाई गई, जिसका नाम आपके नाम पर रखा गया– Rimpa Shiva: Princess of Tabla. रिम्पा शिवा की विलक्षण प्रतिभा को देखते हुए इस डाक्युमैटरी फिल्म का निर्माण किया गया। यह Documentary film वास्तव में French भाषा में बनाई गई है और तब आपकी आयु केवल 12 वर्ष की थी।

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

1. गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत कार्यालय, प्रथम तथा द्वितीय संस्करण, 1999, हाथरस, उ॰प्र॰ 1978
2. गर्ग लक्ष्मी नारायण, हमारे संगीत रत्न, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1984
3. गोड बोले, मधु कर गणेश, अशोक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, 1991
4. गुप्ता निशा, ताल शास्त्र का सैद्धान्तिक पक्ष, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 2010
5. पंराजपे, शरच्चन्द्र श्रीधर, भारतीय संगीत का इतिहास, चौशम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1969
6. मिस्त्री, आबान, पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ, स्वर साधना समिति जन सनेक्स जम्बुलवाड़ी, मुम्बई
7. मिश्र छोटे लाल, ताल प्रसून, बी 26/64 दुर्गाकुण्ड वाराणसी, 1995
8. मिश्र, लालमणि, भारतीय संगीत वाद्य, नई दिल्ली प्रकाशन, भारतीय ज्ञानपीठ, 1973
9. मिश्रा नीता, संगीत में नाद रूप व ध्वनि पक्ष के विभिन्न आयाम, निर्मल पब्लिकेंशस, दिल्ली, 1996
10. मराठे, मनोहर भालचन्दूराव, शर्मा पुस्तक सदन पाटनकर बाजार, लश्कर ग्वालियर (म॰प्र॰)
11. भरतकृत, नाट्यशास्त्र, सम्पादित प॰ केदार नाथ भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली बनारस
12. राम सुदर्शन, तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे, कनिष्क पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण, 2008
13. शर्मा, भगवत शरण, भारतीय इतिहास में संगीत, संगीत मंदिर खुरपा, प्रथम संस्करण, 1981
14. शर्मा भगवत शरण, ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस, 2002

English

1. A.K. Sen, Indian Concept of Rhythm, Kanishka Publishers Distributor, First Publication, 1994, Second edition, 2008.
2. Canada B.C., Virasat Foundation (Magazine) Sept 14, 2002.
3. Deva, B.C., Musical Instruments of India, Firma KFM Pvt. Ltd., 1977
4. Edgar Lowell and Marquesite, Play it by ear, Printed in USA, Reprinted in Sept, by Tracy Clina, 1963.
5. Gotllieb S. Robert, Solo Tabla Drumming of North India, Vol. 1, Motial Banarsidass, Publishers Private Limited, Delhi, 1993.
6. O.C. Goswami, The story of Indian Music, Asia Publishing House, Bombay Calcutta, New Delhi, Madras 1957.
7. Padma Iyer, History of Music, Vishvabharti Publications, First edition, 2004.
8. S. Krishna Swami, Musical Instruments of India, New Delhi, Publication Revised Edition, Division, New Delhi, 1971.
9. The Encyclopedia Americana, Vol. II, New York, 1961.

पत्रिकाएँ

1. संगीत, मासिक पत्रिका, संगीत कार्यालय हाथरस, उ॰प्र॰, संगीत जनवरी फरवरी 1969।
2. संगीत जनवरी फरवरी 1975, अप्रैल 1976।